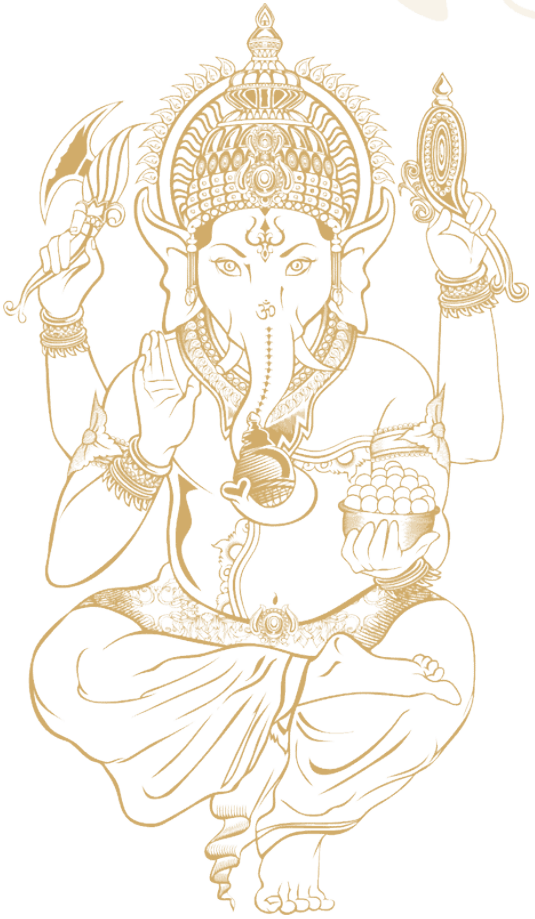

Maya Vyas

23 Sep 1995

05:15 PM

Kankroli

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120827001

तिथि 23/09/1995 **समय** 17:15:00 **वार** शनिवार **स्थान** Kankroli **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:47:59
अक्षांश 25:03:00 उत्तर **रेखांश** 73:58:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:34:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	16:48:17 घं
वेलान्तर	00:07:23 घं
सूर्योदय	06:22:56 घं
सूर्यास्त	18:30:05 घं
चैत्रादि संवत	2052
शक संवत	1917
मास	आश्विन
पक्ष	कृष्ण
तिथि	14
नक्षत्र	पू०फाल्गुनी
योग	शुभ
करण	शकुनि

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	मूषक
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	टी-टीना
पाया(रा.-न.)	ताम्र-रजत
होरा	सूर्य
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

शुक्र 8वर्ष 2मा 16दि

मंगल

09/12/2019
09/12/2026

मंगल	06/05/2020
राहु	25/05/2021
गुरु	01/05/2022
शनि	10/06/2023
बुध	06/06/2024
केतु	02/11/2024
शुक्र	02/01/2026
सूर्य	10/05/2026
चन्द्र	09/12/2026

योगिनी

उल्का 2वर्ष 5मा 17दि

भद्रिका

11/03/2023
10/03/2028

भद्रिका	20/11/2023
उल्का	19/09/2024
सिद्धा	09/09/2025
संकटा	20/10/2026
मंगला	10/12/2026
पिंगला	21/03/2027
धान्या	21/08/2027
भ्रामरी	10/03/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			12:04:06	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	---	0:00			
सूर्य			06:10:53	कन्या	उ०फाल्गुनी	3	सूर्य	बुध	सम राशि	1.49	कलत्र	पितृ	सम्पत
चंद्र			21:11:34	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	गुरु	मित्र राशि	1.37	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			17:04:10	तुला	स्वाति	4	राहु	शुक्र	सम राशि	1.18	मातृ	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध	व		26:19:04	कन्या	चित्रा	1	मंगल	गुरु	स्वराशि	1.10	अमात्य	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			15:33:26	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	गुरु	मित्र राशि	1.05	पुत्र	धन	वध
शुक्र			15:15:11	कन्या	हस्त	2	चंद्र	गुरु	नीच राशि	0.82	ज्ञाति	कलत्र	विपत
शनि	व		26:51:39	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	स्वराशि	1.56	आत्मा	आयु	साधक
राहु	व		02:51:22	तुला	चित्रा	3	मंगल	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		02:51:22	मेष	अश्विनी	1	केतु	शुक्र	मित्र राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

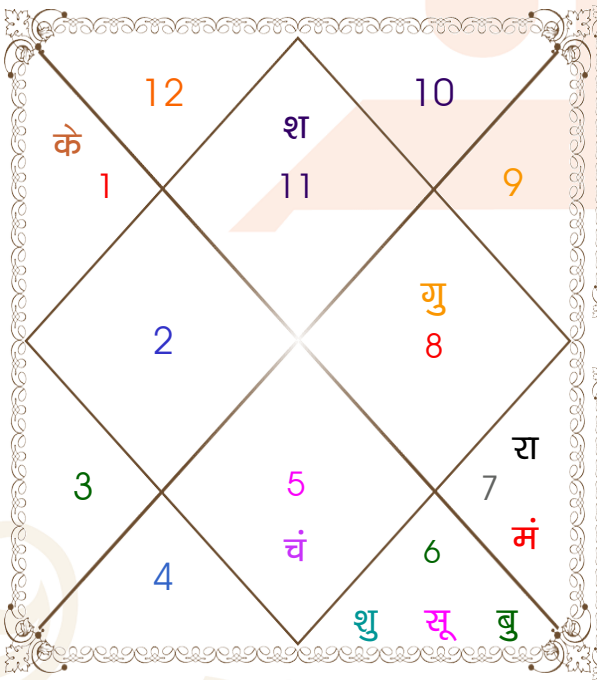

चन्द्र कुंडली

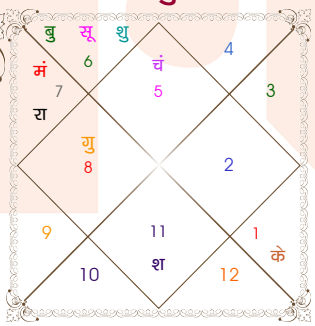

नवमांश कुंडली

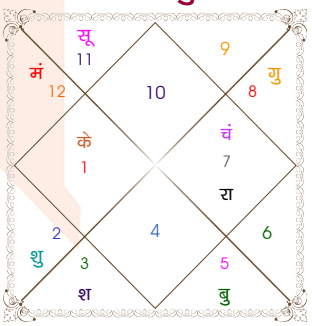

सर्वाष्टकवर्ग

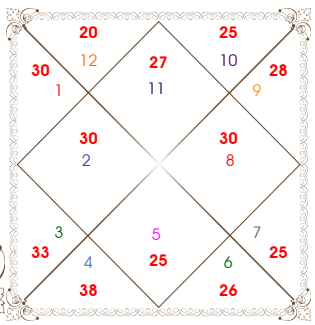

दशमांश कुंडली

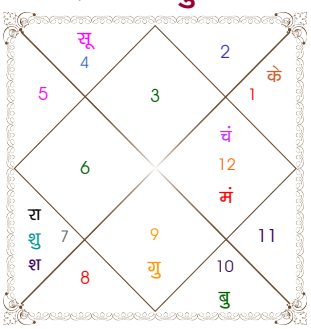

नक्षत्रफल

आप पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाड़ी मध्य, वर्ण क्षत्रिय, वर्ग श्वान, गण मनुष्य तथा योनि मूषक होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "टि" या "टी" अक्षर से होगा।

आप जीवन में विद्याध्ययन करने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगी। आप अत्यन्त गम्भीर प्रकृति से युक्त रहेंगी तथा अन्य सांसारिक कार्यकलाप भी गम्भीरता से ही सम्पन्न करेंगी। पुरुष वर्ग के प्रति आपके मन में विशिष्ट आकर्षण व्याप्त रहेगा तथा उनसे पूर्ण सम्मान तथ सहयोग प्राप्त करेंगी। जीवन काल में समस्त सुख संसाधनों के उपयोग करने में आप सफल होंगी तथा महान विद्वान भी आपको पूज्य विदुषी समझेंगे।

विद्या गोधन संयुक्तो गम्भीरः प्रमदाप्रियः।
पूर्वाफाल्गुनिकां जातः सुखी पंडित पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक विद्या, गौ एवं धन से सम्पन्न, गम्भीर प्रकृति वाला, स्त्रियों का प्रिय, सुखी तथा विद्वानों द्वारा पूजनीय होता है।

आप अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगी। जिससे श्रोता गण आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे। आप एक व्यवहार कुशल महिला भी होंगी तथा अपने अच्छे व्यवहार से सब का विश्वास प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आपका हृदय क्षमाशीलता के भाव से भी युक्त रहेगा। आपकी शारीरिक कान्ति दर्शनीय एवं आकर्षक होगी साथ इधर उधर के भ्रमण करने में आपकी विशेष रूचि रहेगी। साथ ही किसी राज्य में आप राजकीय सेवा में भी रत रहेंगी।

प्रियवाग्दाता द्युतिमानटनो नृपसेवको भाग्ये।
बृहज्जातकम्

अर्थात पूर्वाफाल्गुनी में उत्पन्न जातक प्रिय वक्ता, व्यवहारज्ञ, दानप्रिय, कान्तियुक्त शरीर वाला, यात्रा प्रिय तथा राज्य में राजसेवक होता है।

आपके स्वभाव में चंचलता के भाव की बहुलता रहेगी तथा समस्त कार्यों को आप चंचलता से ही सम्पन्न करेंगी। साथ ही कभी कभी क्रूर कार्यों को भी आप करने वाली होंगी। जिससे परिवारिक जनों तथा अन्य संबंधियों को कष्टानुभूति होगी। आप त्याग की भावना की प्रतिमूर्ति होंगी तथा समय समय पर इस प्रवृति का पालन करती रहेंगी। आप एक बार जिस किसी भी कार्य के बारे में अपने मस्तिष्क में विचार कर लेंगी उसे पूर्ण दृढ़ता के साथ ही पूर्ण करके छोड़ेंगी। यह आपके चरित्र की एक विशेषता होगी।

फल्गुन्यां चपलः कुकर्मस्त्यागी दृढ़ कामुको।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वा फाल्गुनी में उत्पन्न जातक चंचल, कुकर्म करने वाला, त्यागी, दृढ़ तथा कामवासना प्रधान व्यक्ति होता है।

आप नैसर्गिक रूप से वीरता के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी तथा साहसी प्रकृति से भी युक्त रहेंगी। कई अन्य लोग आपके आश्रय में रहेंगे तथा आप उनका सही तरह से लालन पालन करेंगी। आपकी आखें देखने में छोटी होगी तथा कार्यों को चतुराई से पूर्ण करने में आप अत्यन्त ही दक्ष होंगी। साथ ही आप के हृदय में कठोरता तथा अभिमानी प्रवृति का भाव भी विद्य मान रहेगा।

शूरस्त्यागी साहसी भूरिभर्ता कामार्तोऽपिस्याच्छिरालोऽतिदक्षः।
धूर्तः क्रूरोऽत्यन्त सञ्जातगर्वः पूर्वाफाल्गुनयास्ति चेज्जन्मकाले।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाफाल्गुनी में उत्पन्न जातक शूरवीर, दानी, बहुतों का पोषक, चतुर, धूर्त, कामातुर, कठोर हृदय और अतिघमण्डी होता है।

आप ताम्रपाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप आजीवन धन धान्य से सुसम्पन्न रहेंगी। आप पति के रूप में श्रेष्ठ एवं गुणवान पुरूष को प्राप्त करेंगी। साथ ही कई प्रकार के बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं तथा सोना, चांदी आदि से भी आप सुशोभित रहेंगी। आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा स्वास्थ्य भी अच्छा होगा। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा विविध प्रकार से चल अचल जायदाद या सम्पति की स्वामिनी बनेंगी। आप विविध प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग कर सकेंगी। आप की समस्त पुत्र तथा कन्या सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी एवं जीवन में आप संतति सुख अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इस प्रकार आपका परिवारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा अन्य जनों से आपके हमेशा मधुर व्यवहार रहेगा।

सिंह राशि में जन्म लेने के कारण आपका स्वभाव उग्र तथा तेज से युक्त रहेगा। आपके कपोल तथा मुख विस्तृत आकार के तथा आँखें पीतवर्ण से युक्त छोटी होंगी। पर्वतों तथा जंगलों के प्रति आपके मन में विशेष लगाव रहेगा तथा वहां जाने की आपकी तीव्र इच्छा होगी। कभी कभी आप अकारण ही जल्दी क्रोधित हो जाएंगी तथा अभिमान का भी प्रदर्शन करेंगी। साथ ही आप अपने जीवन में मानसिक चिन्ताओं से भी व्यथा का अनुभव करेंगी। आप दीन दुःखियों को दान देंगी तथा सहायता करने में आप परम संतुष्टि के भाव को प्राप्त होगी। माता की आप अत्यन्त प्रिय रहेंगी तथा सन्तति में आपकी पुत्रों की संख्या अल्प ही रहेगी तथा अपने सभी कार्यों को पूर्ण रूप से सोच समझकर सम्पन्न करेंगी।

तीक्ष्णः स्थूलहनुर्विशालवदनः पिङ्गेक्षणोऽल्पात्मजः।

स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननगः कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योऽर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपकी शरीर की अस्थियां पुष्ट रहेंगी। किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व आप कोई न कोई आवाज अवश्य ही सम्पन्न करेंगी साथ ही आपका वक्षस्थल सुन्दर आकर्षक एवं दर्शनीय रहेगा। पराक्रम की आपमें बहुलता रहेगी तथा सभी सामाजिक जन आपका प्रभुत्व प्रसन्नता के साथ स्वीकार करेंगे। साथ ही आप समस्त परिस्थितियों का सावधानी पूर्वक अवलोकन करने के पश्चात किसी भी कार्य को प्रारम्भ करेंगी।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दाताीक्ष्णोऽल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आपका मुख मंडल विशाल तथा ठोड़ी का भाग स्थूल रहेगा साथ ही आप का स्वभाव अभिमानी भी रहेगा जिसका आप यदा कदा प्रदर्शन करती रहेंगी। माता की आप अत्यन्त प्रिय रहेंगी।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोऽभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

आप इतने ही धनार्जन करने से सन्तुष्ट हो जाएंगी जिससे की उदर पूर्ति हो सके। साथ ही मांस की आप अत्यन्त लालची रहेंगी। पर्वतों की गहन गुफाओं में जाने के लिए आप व्यग्र तथा उत्सुक रहेंगी। आप सेवक तथा अपने बन्धु वर्ग से भी युक्त रहेंगी। साथ ही आपका वक्षस्थल भी अत्यन्त विशाल एवं विस्तृत होगा।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप स्वभाव से ही क्षमाशील प्रवृति की होंगी तथा दण्ड की अपेक्षा क्षमा करना उचित समझेंगी। आप हमेशा किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगी निष्क्रिय होकर बैठना आपको रुचिकर नहीं लगेगा। मांस भक्षण के साथ आप इसके साथ मदिरा का भी प्रयोग अवसरानुकूल कर सकेंगी। आपका अधिकांश समय देश विदेश के भ्रमण या यात्राओं को करने में व्यतीत होगा। साथ ही शीत से आप अत्यन्त भयभीत रहेंगी। आपका मित्रवर्ग गुणवान तथा

अच्छे लोगों से सुशोभित होगा। समाज में अन्य लोगों के साथ आप बड़ी ही विनम्रता से अपने आपको प्रस्तुत करेंगी फलतः सभी लोग आपसे प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगे। माता पिता की आप अत्यन्त प्रिय तथा स्नेह की पात्र रहेंगी यद्यपि आप के अन्दर कुछ बुरी आदते भी होंगी। फिर भी समाज में आप प्रसिद्ध रहेंगी।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपकी आखें चंचल होंगी तथा शारीरिक संरचना अत्यन्त दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगी। साथ ही आप गम्भीरता से चारों तरफ निरीक्षण करके अपने कार्यों को प्रारम्भ करेंगी। यह आपकी जागृत प्रवृति का उदाहरण होगा। इसके अतिरिक्त जीवन में समस्त सुखों का उपभोग करके सौभाग्य को प्राप्त करेंगी।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप धार्मिकता की भावना से सुसम्पन्न रहेंगी तथा ब्राहमण एवं देवताओं के प्रति आपके मन में अगाध श्रद्धा रहेगी। कभी कभी आप तुच्छ बातों पर गर्व का भी प्रदर्शन करेंगी। आप दया के भाव से परिपूर्ण रहेगी तथा यथा शक्ति जीवन में इस प्रवृति का पालन करेंगी। बल का भी आप में अभाव नहीं रहेगा तथा एक से अधिक कार्यों अथवा कलाओं में आपकी अभिरूचि रहेगी तथा इनकी आप अच्छी जानकार होंगी। आप अत्यन्त ही बुद्धिमती होंगी तथा आपके द्वारा काफी अन्य लोग सुख को प्राप्त करेंगे तथा उदरपोषण भी करेंगे। आपके शरीर की कान्ति भी दर्शनीय रहेगी।

अपने समाज में आप एक धनवान तथा सम्माननीय महिला समझी जाएंगी। आपके नेत्र विशालता से युक्त होंगे तथा आपके शरीर का वर्ण गौरवर्ण से युक्त रहेगा। साथ ही आप एक अच्छी निशानेबाज भी हो सकती हैं। नगरवासियों के ऊपर पूर्ण प्रभुत्व रखने में आप सफलता प्राप्त करेंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

मूषक योनि में पैदा होने के कारण आप तीव्रबुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा अपने कार्यों को सफल बनाने में सदैव परिश्रम एवं लग्नशीलता के साथ तत्पर रहेंगी। जीवन में समस्त धनैश्वर्य तथा वैभव से आप पूर्ण रूप से युक्त रहेंगी तथा आलस्य एवं अभिमानी वृति से

हमेशा दूर रहेंगी। परन्तु आप कभी भी अन्य लोगों पर पूर्णरूपेण विश्वास नहीं करेंगी। यदि उनसे आप कोई कार्य करवाएंगी तो उसे अपने सम्मुख ही सम्पन्न करवाना उचित समझेंगी।

बुद्धिमान् वित्तसम्पूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः।
अप्रमतोळप्यविश्वासी नरो मूषक योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मूषक योनि का जातक बुद्धिमान, धनवान, स्वकार्य में तत्पर, गर्वहीन तथा किसी पर भी विश्वास न करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते

रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृतियोग, बवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायी होंगे। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियों, मूल नक्षत्र, धृतियोग तथा बवकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण या क्रयविक्रयादि महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखे। इन दिनो तथा समय में आपको शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अच्छा नहीं चल रहा हो मानसिक अशान्ति, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान अथवा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव सूर्य भगवान को प्रातः काल अर्ध्य प्रदान करना चाहिए तथा रविवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, माणिक्य, रक्त वस्त्र, गेहूं, गुड़, रक्त पुष्प इत्यादि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त कूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ प्रभाव नष्ट होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।